योगासन / प्राणायाम

प्राणायाम :

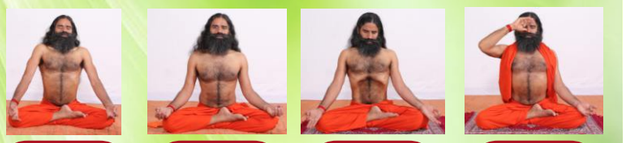

बैठकर किये जाने वाले आसन :

पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन :

योग-प्राणायाम निर्देश

परम पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा निर्देशित प्राणायाम एवं आसनों का अभ्यास, जिसकी विधि एवं सावधानियों को ध्यान में रखते हुए योगाचार्य के निर्देशन में करें।

Skin Diseases / त्वचागत रोग

कुष्ठघ्न

(हवन सामग्री)

500 g

स्वास्थ्य-साधना का आधार

भारत में निर्मित
MADE IN BHARAT

Store in cool & Dry Place.
Keep away from direct sunlight.
After opening transfer the content in an airtight container.

Mfd. By:
Divya Pharmacy
For mfg. Unit address, read the first character (s) of the Batch Code #.
A) A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand, INDIA
B) Unit-II, Khasra No. 210, 211, Patanjali Food & Herbal Park Laksar Road, Padartha, Haridwar-249404, Uttarakhand, INDIA

For Feedback and complaints write to :
The Consumer Care Manager, Divya Pharmacy,
A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand.
E-mail : customercare@divyapharmacy.org
Customer Care Toll Free No. : 18001804055
जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- yajyavijyaanam@gmail.com

8904049100726

Images are for representation purpose only

आयुर्वेदेषु यत्प्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम्।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत्।।
-(आयुर्वेद)

अर्थात्– आयुर्वेद में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है, उन-उन रोगों के शमन के लिए उन्हीं औषधियों से हवन करें।

प्रयोग विधि– प्रतिदिन सुबह-शाम प्रस्तुत हवन सामग्री से रोग की अवस्थानुसार 21, 51 या 108 आहुतियां मंत्रोच्चारण पूर्वक प्रदान करें। प्रत्येक आहुति में 2 से 3 ग्राम गोघृत के साथ उसी अनुपात में सामग्री की भी आहुति दें।

कक्ष में हवन करते समय खिड़की-दरवाजे खुले रखें तथा हवन के पश्चात् शांत-अग्नि के अंगारों पर प्रस्तुत जड़ी-बूटियों व गुग्गुल आदि द्रव्यों को रखें और उठ रही मंद सी धूनी वाले वायुमण्डल में रोगानुसार योगाभ्यास करें।

पुष्करमूल (कुष्ठ), ज्योतिष्मती, अगर, तेपत्ता, गुग्गुल, तुलसी से निर्मित कुष्ठघ्न (हवन सामग्री) से कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ आदि के उपचार में लाभप्रद तथा वातावरण जीवनीय शक्ति से युक्त, सुगन्धित, स्वच्छ एवं शान्तिदायक बनता है।

Kusthaghna (Havan Samagri) useful in treatment of kustha, sveta kustha etc. and maintain vitality, good smelling, peacefulness, health and hygiene of atmosphere.

यज्ञ एवं योग साधना

केन्द्र

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि।
परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।। -(यजु. 1.2)

अर्थात् : हे विद्यायुक्त मनुष्य! तू जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है। जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला, वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला, वायु को शुद्ध करने वाला व संसार का धारण करने वाला तथा जो उत्तम स्थान से सुख का बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का तू मत त्याग कर तथा तेरा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उस को न त्यागे ।

अग्निहोत्र से वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना, इसीलिये इस को देवयज्ञ कहते हैं। (स०प्र० चतुर्थसमुल्लास) -महर्षि दयानंद सरस्वती।

यज्ञ चिकित्सा

पतंजलि आयुर्वेद
का
विशिष्ट उत्पाद

त्वक्कान्ति

500 g

(हवन सामग्री)

स्वास्थ्य-साधना का आधार

भारत में निर्मित
MADE IN BHARAT

Store in cool & Dry Place.
Keep away from direct sunlight.
After opening transfer the content
in an airtight container.

Mfd. By:
Divya Pharmacy
For mfg. Unit address, read the first character (s) of the Batch Code #.
A) A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand, INDIA
B) Unit-II, Khasra No. 210, 211, Patanjali Food & Herbal Park
Laksar Road, Padartha, Haridwar-249404, Uttarakhand, INDIA
For Feedback and complaints write to :
The Consumer Care Manager, Divya Pharmacy,
A-1, Industrial Area, Haridwar-249401, Uttarakhand.
E-mail : customercare@divyapharmacy.org
Customer Care Toll Free No. : 18001804055
जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- yajyavijyaanam@gmail.com

8904049100726

Images are for representation purpose only

आयुर्वेदेषु यत्प्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम्।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत्।।
-(आयुर्वेद)

अर्थात्– आयुर्वेद में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है, उन-उन रोगों के शमन के लिए उन्हीं औषधियों से हवन करें।

प्रयोग विधि– प्रतिदिन सुबह-शाम प्रस्तुत हवन सामग्री से रोग की अवस्थानुसार 21, 51 या 108 आहुतियां मंत्रोच्चारण पूर्वक प्रदान करें। प्रत्येक आहुति में 2 से 3 ग्राम गोघृत के साथ उसी अनुपात में सामग्री की भी आहुति दें।

कक्ष में हवन करते समय खिड़की-दरवाजे खुले रखें तथा हवन के पश्चात् शांत-अग्नि के अंगारों पर प्रस्तुत जड़ी-बूटियों व गुग्गुल आदि द्रव्यों को रखें और उठ रही मंद सी धूनी वाले वायुमण्डल में रोगानुसार योगाभ्यास करें।

गुग्गुल, दूर्वा, शतावर, पनवाड़, दारूहल्दी, करंज, कुष्ठ, गिलोय, बाकुची, बहेड़ा, सफेद चन्दन, जीरी काली, हल्दी, खैर, नीम, मंजिष्ठ, चिरायता, द्रोणपुष्पी, हरड़, देवदारू, इन्द्रायण, उष्वा, अपामार्ग, अर्कमूल, अनन्तमूल, वच, कालमेघ से निर्मित त्वक्कान्ति (हवन सामग्री) से दाद, खुजली, एक्जिमा, सोरायसिस, छोटी व बड़ी माता आदि चर्मरोगों के उपचार में लाभप्रद तथा वातावरण जीवनीय शक्ति से युक्त, सुगन्धित, स्वच्छ एवं शान्तिदायक बनता है।

Twakkanti (Havan Samagri) useful for treatment of ringworm, itching, excema, psoriasis, small pox, chiken pox etc. skindiseases and maintain vitality, pleasant smell, peace, health and hygiene of atmosphere.

यज्ञ के भस्म का सेवन

सभी प्रकार के रोगों में यज्ञ शेष भस्म को छानकर प्रति 1 लीटर पानी में 2 ग्राम से 5 ग्राम की मात्रा में कपड़े की पोटली बनाकर जल पात्र में रखकर 8 घंटे के बाद यही पानी पिऐं। इसी जल मे सोंठ का प्रयोग भी अत्यंत लाभदायक है। सामान्य व्यक्ति भी स्वास्थ्य लाभ हेतु इस पानी को पी सकते है। छानी हुई भस्म को पानी मिलाकर लेप लगाने से चहरे की सुन्दरता, सभी प्रकार के चर्मरोग एवं घावों को ठीक करती है।

आयुर्वेदिक उपचार

*वैद्य के परामर्श से सेवन करें।

- गंधक रसायन, दिव्य गिलोय सत, दिव्य रसमाणिक्य, दिव्य ताल सिन्दूर, दिव्य प्रवाल पिष्टी, दिव्य महामंजिष्ठारिष्ट, दिव्य खदिरारिष्ट।
- दिव्य कायाकल्प वटी, दिव्य आरोग्यवर्द्धिनी वटी, दिव्य कैशोर गुग्गुलु, दिव्य निम्ब घनवटी, दिव्य कायाकल्प तैल।

पथ्य-आहार

गेहूँ, मूँग की दाल (छिलके वाली), लौकी, तोरई, कच्चा पपीता, गाजर, टिण्डे, पत्तागोभी, करेला, परवल, पालक, हरी मेथी, अंकुरित अन्न, सहिजन की फली, चना। फलों में सेब, पपीता, चीकू, अनार, अमरूद, जामुन, मौसमी आदि फलों का प्रयोग सामान्यतः किया जा सकता है। सूखे मेवों में काजू, बादाम, मुनक्का, किशमिश, अंजीर, चिलगोजा, छुहारे, खजूर आदि का प्रयोग करें।

अपथ्य-आहार

दूध के साथ नमक वाले पदार्थ न लेवें। मीठा (चीनी, गुड़) बिल्कुल भी न लेवें, बैंगन, जिमीकन्द, अरबी, नींबू, टमाटर आदि का सेवन न करें। मिर्च, आचार, मसाला वाली व गर्म खाद्य पदार्थ न लेवें। तले पदार्थ, चाय, कॉफी, कोल्डड्रिंक्स, आइसक्रीम, पिज्जा, बर्गर, पैटीज, इडली, डोसा, तम्बाकू, गुटखा, पान-मसाला, माँस-मदीरा, अण्डे व मैदे से बने ब्रेड आदि, कन्फैक्शनरी व सिन्थेटिक फूड्स आदि अहितकर, अभक्ष्य व त्याज्य पदार्थो का सेवन कदापि न करें। तनाव चिन्ता में न रहे।

सुगंध-मिष्ठ-पुष्टिवर्धक, है रोगनाशक चार जिसमें हवि।
ऐसे दिव्य तेज पुंज को, कहते अग्निहोत्र जिसे कवि।।

घरेलू उपचार

- पानी ज्यादा पिएं, नीम के पत्ते 3-3 सुबह शाम खाएं।
- 5 ग्राम चिरौंजी, 1 चम्मच हल्दी, 1 चम्मच शहद तथा 1 चम्मच बेसन को कच्चे दूध में मिलाकर चेहरे पर लगाएं, चेहरे के निखार के लिए।
- 1 पके टमाटर के रस में 1/2 चम्मच नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाएं।
- जैतून के तैल में नींबू का रस मिलाकर पूरे शरीर में मालिश करें।
- पेट साफ रखें, पेट साफ न होने पर त्रिफला का चूर्ण रात्री में सोते समय (गुनगुनें जल से) लेवें।
- शीशम के पत्तों का जूस पिये या सुबह चबा-चबाकर खायें।
- गोमूत्र, गोबर का रस एवं नीम के पत्तों का जूस उपरोक्त तीनों को मिलाकर शरीर पर लगायें।
- हरी सब्जियाँ ज्यादा खायें तथा ऑर्गेनिक सब्जियों एवं फलों का सेवन अधिक करें।
- लौकी के जूस का सेवन करें।

प्राकृतिक चिकित्सा

- सोरायसिस, एग्जिमा आदि चर्मरोगों में मिट्टी की पट्टी, नीम के पानी का एनिमा, वाष्पस्नान, धूपस्नान तथा विषनिष्कासक एवं शोधक आहारों के सेवन से लाभ होता है।
- मुंहासे में मिट्टी की पट्टी, नीम के पानी से चेहरे का प्रक्षालन, शहद तथा नींबू के रस की मालिश, वाष्पस्नान, कटिस्नान आदि क्रियाओं के प्रयोग से तथा शोधक व पोषक आहार का सेवन करने से लाभ होता है।

यज्ञ महिमा, पतंजलि योगपीठ

से जुड़ने हेतु सोशल मीडिया

www.facebook.com/swamiyagyadev www.facebook.com/स्वामी विप्रदेव
twitter.com/@swamiyagyadev twitter.com/@SVipradev
www.youtube.com/user/Swamiyagyadev
https://instagram.com/Swamiyagyadev

Vedic: 4:00 A.M. to 5:00 A.M. & 11:30 A.M. to 11:55 AM, 11:30 P.M. to 11:55 P.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

आस्था भजन: 5:00 A.M. to 6:00 A.M. (प्रतिदिन अग्निहोत्र कार्यक्रम देखें।)

E-mail ID : yajyavijyaanam@patanjaliyogpeeth.org.in Mobile & Whatsapp No. : 9068565306, 9890977399